REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

बिहार में स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात शिक्षा का विकास

पंकज कुमार
एम० ए० (इतिहास), बी० एड०.,
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय, दरभंगा , गांधी चौक (बलुआ) मधुबनी,

भूमिका

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कॉलेज की संख्या छात्रों की संख्या और विश्वविद्यालयों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई। राज्य की कांग्रेस की सरकार ने शिक्षा के विकास को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। बिहार के तत्कालीन बजट भाषण में राज्य के वित्त मंत्री अनुग्रह नारायण सिंह ने कहा– इस

बजट में शिक्षा के विकास पर सर्वाधिक जोर दिया गया है। इससे पूर्व पुलिस विभाग पर सर्वाधिक खर्च पर जोर दिया जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1949 में बिहार में लड़कों के लिए 25 कॉलेज थे जबकि लड़कियों के लिए प्रसिद्ध 3 कॉलेज थे। छात्रों की संख्या में नामांकित थे वही छात्राओं की संख्या सिर्फ 455 थी।

फलतः नियोजित ढंग से शिक्षा के विकास पर सरकार द्वारा ध्यान दिया गया। सरकार ने क्षेत्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना पर बल दिया। फलतः 2 जनवरी 1952 को बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर की स्थापना हुई पटना कॉलेज साइंस कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, पटना ट्रेनिंग कॉलेज, पीडब्लयू मेडिकल कॉलेज, वीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेज, भी अनुदानित कॉलेज के रूप में पटना कॉलेज के अधीन रहा।

उच्च शिक्षा

1947–48 में एक गर्वमेन्ट डिग्री कॉलेज की रांची में आदिवासी छात्रों की सुविधा के लिए खोला गया। एक गर्वमेन्ट डिग्री कॉलेज छात्राओं के लिए पटना में खोला गया। 1944 में एक वीमेन्स कॉलेज भागलपुर में खोला गया जो सुन्दरवती महिला कॉलेज के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

पटना कॉलेज में प्रायोगिक मनोविज्ञान की पढ़ाई प्रारंभ की गई। टी० एन० जे० कॉलेज, भागलपुर सहित सभी सरकारी कॉलेजों की सीटों में बढ़ोतरी की गई। पटना कॉलेज, साइंस कॉलेज, जीबीबी कॉलेज और टीन एन जे कॉलेज में कला एवं विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर की पढ़ाई प्रारंभ की गई। इस कार्य हेतु विश्वविद्यालय को अनुदान दिए गए और 1 लाख रूपये यूनिवर्सिटी खोलने के लिए दिए गए। 1950–51 ई0 में पटना में छात्रों के छात्रावासों की सुविधा के लिए सरकार द्वारा समुचित कदम उठाए गए। विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए 25 लाख रूपये आवंटित किए गए।

16 फरवरी 1950 को विधान मंडल में राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में तीन विश्वविद्यालय पटना विश्वविद्यालय, बिहार विश्वविद्यालय और रांची विश्वविद्यालय की स्थापना की संकल्प लिया पटना विश्वविद्यालय को शिक्षण विश्वविद्यालय और बिहार विश्वविद्यालय को शिक्षण सह प्रबंधन विश्वविद्यालय 2 जनवरी 1952 को बनाया गया। यह बिहार में अंग्रेजी शिक्षा की दिशाम` एक लैंडमार्क साबित हुआ। राज्य सरकार ने एक विधान द्वारा 33º2 प्रतिशत ग्रांट पटना विश्वविद्यालय को तथा 50 प्रतिशत अनुदान बिहार विश्वविद्यालय को दिया।

पटना विश्वविद्यालय को 35 लाख और बिहार विश्वविद्यालय को 18 लाख रूपो अनुदान दिया। बिहार विश्वविद्यालय को पटना से मुजफ्फरपुर 1960 में शिफ्ट कर दिया गया।

1951 में देवघर कॉलेज, 1954 में संथाल परगना कॉलेज और गोदरा कॉलेज की स्थापना की गई। 1951 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने नालंदा इन्सटीटयूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज एंड रिसर्च की आधार शिला दरभंगा में आगे चलकर मिथिला इंस्टीच्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च की स्थापना की गई। इसी तरह केपी० जायसवाल रिसर्च इन्सटीटयूट उच्च शिक्षा में रिसर्च के लिए पटना में स्थापित की गई। तत्कालीन आइसीएस और शिक्षा सचिव जेसी० माथुर ने इन शोध संस्थाओं की संस्थापना में काफी दिलचस्पी दिखायी। शिक्षा पर कुल खर्च 1952–53 में 4.10 करोड़ और 1953–54 में यह बढ़कर 5.1 करोड़ हो गई।

1956–57 में भागलपुर और रांची में दो ट्रेनिंग कॉलेज खोले गए। इस से पूर्व देवघर, सहरसा और छपरा में ट्रेनिंग कॉलेज खोले गए थे। 1955–56 में दस लाख रूपये विकास अनुदान के साथ में पटना और छपरा विश्वविद्यालय को सरकार ने मुहैया कराया। बिहार विश्वविद्यालय को सरकार ने छपरा, डालटेनगंज, भागलपुर और गया में कॉलेज के विकास के लिए 4.5 लाख रूपया आवंटि किया। भागलपुर एवं रांची में महिला कॉलेज के विकास के लिए 4000 रूपये वार्षिक अनुदान के रूप में दिया। पटना विश्वविद्यालय को 2 लाख का अनुदान, बीएन कॉलेज में कॉमन रूम एवं लाईब्रेरी बनाने के लिए साथ ही महिला ट्रेनिंग कॉलेज पअना में क्वार्टर एवं हास्टल निर्माण के लिए यह राशि प्रदान की गई। साइंस और टेक्निकल शिक्षा की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए राज्य सरकार ने आई एस सी और बी0 एस0सी0 कक्षाओं में सीटों की संख्या में बढ़ोतरी करते हुए आईएससी में 2672 से बढ़ाकर 6260 तथा बीएससी कक्षाओं की सींटे बढ़ाकर 455 से 1000 कर दी। दोनों विश्वविद्यालय में एमएससी कक्षाओं में सीटों की संख्या में बढ़ोतरी की गई। पटना और बिहार विश्वविद्यालय ने क्रमशः 32000 + 995000 और 683200 +2480850 रूपये रेकरिंग और रेकरिंग अनुदान के रूप में प्राप्त किया। सरकार ने 290000 ब्याज रहित ऋण विश्वविद्यालय के हास्टल निर्माण के लिए दिया।

1957–58 में पटना विश्वविद्यालय द्वारा पटना में दरभंगा हाउस खरीदा गया जिसका उद्देश्य कला विषयों के पीजी क्लास का संचालन था। इसके लिए सरकार ने 6 लाख रूपया दिया। सरकार का उद्देश्य रांची, भागलपुर और मुजफ्फरपुर महिला कॉलेज में घाटे को खत्म करना था। सरकार ने 1958–59 में यह निर्णय ले लिया कि सभी जिला हेडक्वार्टर के बीएससी की पढ़ाई शुरू की जाय। रांची कॉलेज में फिजीक्स और कैमेस्ट्री की पढ़ाई की व्यवस्था की गई। एलएस कॉलेज, मुजफ्फरपुर में वनस्पति विज्ञान और जंतुविज्ञान में एमएससी की पढ़ाई प्रारंभ की गई।

1960 में बिहार स्टेट यूनिर्वसीटी एक्ट 1960 को सरकार ने पारित कर बिहार के उच्च शिक्षा के विकास के लिए क्रांतिकारी कदम उठाये। इस एक्ट के द्वारा बिहार में विश्वविद्यालय सेवा के लिए सेवाशर्ते और विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणाली को विस्तार किया गया। इसके अनुसार बिहार के विश्वविद्यालयों को चार भागों में बांटा गया। यानि बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के क्षेत्राधीन तिरहुत डिवीजन, छोटानागपुर डिवीजन, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्राधीन भागलपुर डिवीजन, भागलपुर विश्वविद्यालय के क्षेत्राधीन और पटना विश्वविद्यालय के अधीन पटना और मगध के क्षेत्र आ गए। कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा की भी स्थापना हुई। थ्री ईयर डिग्री कोर्स और बीए प्रीवियस कक्षाएं भी 1960 में प्रारंभ हुई। इसके तहत बीए दो वर्षीय बीए. बीएससी की पढ़ाई शुरू हो गई। 1962 में मगध विश्वविद्यालय की स्थापना हुइ। जिसका मुख्यालय गया को बनाया गया। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय से अलग कर दरभंगा में की गई।

बिहार में पांच विश्वविद्यालय क्रमशः पटना विश्वविद्यालय पटना, मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, रांची विश्वविद्यालय, रांची, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के अलावा यहां तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए भी प्रयास किया गया।

कृषि की शिक्षा के लिए राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना समस्तीपुर जिले के पूसा में की गई। इंडियन–स्कूल ऑफ साइन्स की स्थापना धनबाद में की गई। वहीं बिरला इन्स्टूयूट ऑफ टेक्नोलॉजी की स्थापना रांची में की गई। जिन्हें डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा मिला। इस तरह स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कॉलेजों की संख्या और छात्रों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हुई। 1946–42 के मध्य बिहार में 23 कॉलेज थे जिसमें सिर्फ तीन कॉलेज लड़कियों के लिए थी। 1977–78 में कॉलेजों की संख्या बढ़कर 275 हो गई जिसमें

32 कॉलेज लड़कियों के लिए थी। 1985–86 में कॉलेजों की कुल संख्या 275 हो गई। 1976–77 में कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़कर 184323 हो गई जिसमें लड़कियों की संख्या बढ़कर 28022 हो गई।

1985–86 में बिहार विश्वविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंन्ट अंगीभूत एवं सम्बद्ध कॉलेजों की सूचीः–

विश्वविद्यालय	पीजी डिपार्टमेन्ट	कॉलेजों की संख्या		कुल
		अंगीभूत	सम्बद्ध	
भागलपुर विश्वविद्यालय	23	35	12	47
रांची विश्वविद्यालय	25	41	22	63
मगध विश्वविद्यालय	17	50	84	13
बिहार विश्वविद्यालय	17	56	56	92
एलएन एम विश्वविद्यालय	18	61	27	88
पटना विश्वविद्यालय	27	–	12	12

1962 में मगध विश्वविद्यालय की स्थापना गया में की गई थी और एक दशक के बाद मिथिला विश्वविद्यालय की स्थापना दरभंगा में की गई। इसके अन्तर्गत कोसी डिवीजन और दरभंगा डिवीजन के क्षेत्राधीन कॉलेजों को सम्बद्ध किया गया। साथ ही यहां पीजी स्नातकोत्तर की शिक्षा आर्टस, कामर्स और विज्ञान संकाय में की गई। मिथिला विश्वविद्यालय और पीजी डिपार्टमेंट को दरभंगा राज के विशाल कैंपस पर नियंत्रण के लिए सरकार के बिहार स्टेट यूनिवर्सिटी कमीशन चलाने का निर्णय लिया इसके तहत नियुक्ति, प्रोन्नति और बरखास्तगी का अधिकार मिला, बिहार लोक सेवा आयोग को शिक्षकों की नियुक्ति का अधिकार मिला। 1983 में विश्वविद्यालयों को स्वायतता प्रदान करने के लिए विभिन्न निकायों का गठन किया गया। इसलिए विभिन्न आर्डिनेन्स के द्वारा समय समय पर इसमें कटौती भी की गई। यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (यूजीसी) दिल्ली के पैटर्न पर बनाया गया। लेकिन यह इंटर यूनिवर्सिटी बोर्ड के रूप में परिणत हो गया। सरकार ने अनिवार्य विषय के रूप में अंग्रेजी को पूनः जुलाई 1967 में हटाने का निर्णय लिया। जो छात्र मैट्रिक परीक्षा में अंग्रेजी में अनुतीर्ण थे उन्हें भी पास कर कॉलेजों में नामांकन लिया गया। यह जून–जूलाई 1967 में सत्र से प्रारंभ हुआ।

सरकार द्वारा कॉलेजों में पुस्तकों की खरीद, अखबार और भोजन सामग्री की आपूर्ति पर फंड बढ़ाया गया और कॉरपोरेट सोसायटी के द्वारा उन्हें रियायती मूल्य पर उपलब्ध उससे लाया। सरकार ने लाइब्रेरी के लिए अनुदान 5 लाख से बढ़ाकर 6 लाख कर दिया और स्कॉलरशिप की संख्या बढ़ाकर 2250 से 4000 कर दिया। सरकार ने हॉस्टल के लिए अनुदान की राशि 9 लाख से बढ़ाकर 20 लाख कर दिया। विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली से छात्रों को भी सम्बद्ध किया गया। शिक्षा मंत्री की अध्यक्षता में कमेटी बनी जिसमें कुलपति और छात्रों प्रतिनिधि को भी रोजगार परक पाठयक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई। छात्रों के विचारों और उनकी जरूरतों के लिए सरकार ने सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालय में छात्र संगठन बनाने की पहल की। 1977–78 के दौरान 243 कॉलेजों में तथा राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पीजी डिर्पाटमेंट में बुक बैंक की स्थापना की गई। गैर कांग्रेसी सरकार में 1978–79 और 1979–80 के दौरान उच्च शिक्षा के पगति पर बहुत काम नहीं हो सका। अंग्रेजी को अनिवार्य विषय से हटाना जिसका कुछ लाभ हुआ लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता के लिए यह हानिकारक साबित हुआ। शिक्षा बिहार के मुख्यमंत्री डॉ0 जगन्नाथ मिश्र के बनने के बाद प्रत्येक क्षेत्र के प्रगति हुई।

बिहार में जेनरल विश्वविद्यालयों के दो एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय भी खोले गए। पहला राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा, और दूसरा बिरसा कृषि विश्वविद्यालय राँची। दरभंगा के कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय केवल संस्कृत विषय की अध्ययन के लिए खोला गया। धनबाद में इण्डियन स्कूल ऑफ माइन्स और रांची में बिरसा इस्टीटयूट ऑफ टेक्नॉलॉजी की स्थापना हुई। जिसे डीम्ड यूनिर्वसीटी का दर्जा मिला। इस तरह 1546–47 में स्वतंत्रता की प्राप्ति के समय बिहार में 27 कॉलेज थे, जिसमें केवल कॉलेज लड़कियों के लिए थे। 1977–78 में कॉलेजों की संख्या बढ़कर 275 हो गई। जिसमें से 32 कॉलेज लड़कियों के लिए थे।

1985–86 में कुल कॉलेजों में छात्रों की संख्या 12,483 थी जिससे छात्राओं की संख्या 284 थी। लेकिन 1976–77 कॉलेजों में छात्रों की संख्या बढ़कर 184.323 हो गई जिसमें से छात्राओं की संख्या 28,022 थी।

सेकेण्डरी एजुकेशन

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बिहार में सेकेण्डरी शिक्षा में भी काफी प्रगति लोगों के उत्साह और राजनीतिक नेताओं की दिलचस्पी के कारण हुई। 1950–51 के बजट रिपोर्ट में 3 करोड़ 19 लाख रूपये शिक्षा पर व्यय के लिए रखा गया। केन्द्रीय सरकार द्वारा विकास कार्यो से केन्द्रीय सहायता हटा लेने के बावजूद बिहार सरकार ने पहली बार शिक्षकों को वेतन प्राइमरी से लेकर कॉलेज तक में बढ़ाया। उसके लिए 1 करोड़ 20 लाख रूपये अतिरिक्त व्यय किया गया।

1952–53 में सेकेन्डरी शिक्षा के लिए 1 करोड़ 70 लाख रूपये आवंटित किए गए जबकि शिक्षा पर सम्पूर्ण व्यय 12 करोड़ था। बिहार के वित्त मंत्री अनुग्रह नारायण सिन्हा ने अपने बजट अभिभाषण में संतोष व्यक्त किया कि बिहार की जनसंख्या के हिसाब से प्रति व्यक्ति कम से कम एक रूपया शिक्षा पर खर्च किया गया। जबकि 1946–47 में शिक्षा पर खर्च चार आना प्रति व्यक्ति बैठता था और शिक्षा पर खर्च 1 करोड़ 6 लाख ही खर्च हुआ। जबकि आम शिक्षा पर व्यय बजट में सबसे अधिक है। इससे पुलिस विभाग पर ही सर्वाधिक व्यय किया जाता था।

पटना में बिहार स्कूल इग्जामिनेशन बोर्ड की स्थापना 1953–54 में की गई। जिससे पटना विश्वविद्यालय से मैट्रिकुलेशन परीक्षा का भार ले लिया। बिहार सरकार के सेकेन्डरी शिक्षा के पाठयक्रम को विकासोन्मुख बनाया और स्कूल स्तर पर छात्रों के मूल्यांकन की पद्धति को मैट्रिक की वार्षिक परीक्षा में जोर दिया। उस समय बिहार में 774 पूर्णतः स्वीकृत 720 आंशिक रूप से स्वीकृत हाई स्कुल थे। दो सरकारी हाई स्कूल सरायकेला और खरसाबा को जिला स्कूल का दर्जा दिया गया। 28 ग्रामीण क्षेत्रों में हाई स्कूल को अनुदान स्कूल की श्रेणी में लाया गया।

1954–55 के दौरान 5 लाख रूपये हाई स्कुल में व्यवसायिक शिक्षा के विषयों को कोर्स के समाहित करने के लिए बदया गया। लड़के और लड़कियों के लिए सरकार हाई स्कुलों में विज्ञान की पढ़ाई के लिए विशेष वित्तीय प्रावधान किए गए। सरायकेला स्कूल के भवन निर्माण को तथा नेतरहाट स्कुल को प्रथम दर्जा के लड़कों के स्कूल के रूपयों बजट के दायरे में लाया गया। नेतरहाट स्कूल प्रारंभ से ही बिहार की प्रीमियर स्कूल के ख्याति प्राप्त कर ली। इसी तरह का दूसरा स्कूल सैनिक स्कूल झुमरी तिलैया में खोला गया।

1956–57 के दौरान बिहार में हाई स्कूलों की कुल संख्या 913 हो गई जिससे 2.4 लाख छात्र, नामांकित थे। 1957–58 के वित्तीय वर्ष्ज में पहली बार बिहार में गैर सरकारी स्कूलों में भी नियमित वेतन की पद्धति प्रारंभ की गई। राज्य सरकार ने 1 अप्रैल 1949 से ही इसे लागू कर दिया लेकिन यहां पे स्कुल सरकारी हाई स्कुलों के शिक्षकों के बराबर नहीं था। सरकार ने गैर सरकारी हाई स्कुलों के शिक्षकों के लिए इस मॉडल में 4 स्कूल लागू करने का निर्णय लेते हुए वैसे गैर सरकारी स्कूलों को मैचिंग ग्रांट 50/– देने का निर्णय लिया। जहां मॉडल पेपर लागू किया गया था। शिक्षकों के लिए भविष्यनिधि स्कीम का प्रावधान किया गया और इसके लिए सरकार ने 110 प्रतिशत पूर्ण वेतन के देने का निर्णय लिया। शिक्षकों के सेवानिवृति को सरकार ने 60 वर्ष कर दिया। बिहार सरकार ने सेवानिवृति को सरकार ने 60 वर्ष कर दिया। 1959–60 में सरकार ने गर्दनी बाग पटना में एक हाईस्कुल खोला। सरकार ने मुनिसपल क्षेत्रों में जहां स्कूल नहीं था 5 अनुदानित हाई स्कूल खोलने का निर्णय लिया। 1960–61 में 70 हाई स्कूलों को मल्टीपरपस स्कूलों में अपग्रेड कर दिया गया और 50 पूर्णतः अनुदानित गर्ल्स स्कूल को खोले गए।

बिहार सरकार ने बेहतर शिक्षा और शिक्षकों की नियमित वेतन भुगतान का ध्यान में रखते हुए 1974 में सेकेण्डरी एजुकेशन बोर्ड की स्थापना की। जिसे 1971 में फिर से पुर्नगठन किया गया। इसी वर्ष बिहार एजुकेशन सर्विस कमीशन की स्थापना की गई जिसका कार्य नये गर्वमेन्ट हाई स्कूल में शिक्षकों की नियुक्ति कराया गया। कोठारी कमीशन की अनुशंसा के लागू होने के बाद बिहार सरकार ने हाईस्कुल के शिक्षकों को घाटा अनुदान देकर शुरू कर दिया और नव गर्वमेन्ट तथा गर्वेमेन्ट हाई स्कूलों के शिक्षकों के बीच असफलता को खत्म कर दिया गया। 1975–76 में खत्म कर दिया गया। 1979–80 में हाई स्कूल की 92 बैठक की दरम्या गरीब छात्रों को की मुखिया के लिए की गई। सरकार ने 92 राज्य पोषित हाई स्कूल खोलने का निर्णय लिया गया। स्कूल एक प्रतिक थे मुख्यालय बनने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में का मिली प्रतिदिन कर दिया। उन्होंने

नये गर्वमेन्ट हाई स्कुलों के सरकारीकरण का क्रांतिकारी फैसला लिया। 3020 हाई स्कुल के 3500 शिक्षक और 11000 नन टीचिंग स्टाफ सरकारी सेवा के आग्रह इससे राज्य पर12 करोड़ का वित्तीय भार पड़ गया। लेकिन वे शिक्षकों के मसीहा कहलाने लगे। डा0 जगन्नाथ मिश्र ने तीन लड़कों को और एक लड़कियों के लिए गर्ल्स हाई स्कुल तथा एक आवासीय मिडिल स्कुल प्रत्येक प्रखण्ड में खोलने का निर्णय साथ ही एक आवासीय स्कूल प्रत्येक जिले में खोलने का निर्णय लिया गया।

वर्ष	हाई स्कुलों की सं.	हाई स्कुलों का मल्टीपरपस हाई स्कूल में अपग्रेडेश	अपग्रेडशन ऑफ हाई स्कूल हायर सेकेण्डरी स्कूलों की संख्या	छात्रों की संख्या की संख्या
1951	641	—	—	1.5 लाख
1960–61	—	70	—	—
द्वितीय पंचवर्षीय योजना अवधि	—	—	1515	—
1963	—	—	1732	—
1964	—	—	70	55,000
1965	—	—	1877	—
1966	2100	नवीकरण 1971	सेकेण्डरी 1971	5.19 लाख

दरभंगा में वहां के मारवाड़ी समाज के द्वारा 1959 में मारवाड़ी स्कूल बिल्डिंग में मारवाड़ी कॉलेज की स्थापना की गई जो आज एक प्रतिष्ठित संस्थान है। यहां पर सह शिक्षा की व्यवस्था है 1960–61 में यहां के छात्रों की संख्या 585 और यहां 20 शिक्षक थे। प्रारंभ में यहां बीए की पढ़ाई होती थी और यह बिहार विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था।

लहेरियासराय के निकट जुलाई 1938 में मिल्लत कॉलेज की स्थापना की गई जहां बीए स्तर तक पढ़ाई होती थी। 1960–61 में यहां 500 छात्र नामांकित थे और यहां 15 व्याख्याता कार्यरत था। इस कॉलेज में मुस्लिमों की संख्या सर्वाधिक थी। शुरू में यह कॉलेज की स्थति आर्थिक रूप से कमजोर थी।

वर्तमान मधुबनी जिले के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आर0 के0 कॉलेज की स्थापना यहां के एक प्रसिद्ध व्यवसायी रामकृष्ण पूर्वे द्वारा की गई थी। 1946 तक यह इंटरमीडिएट कॉलेज के रूप में रहा और 1947 में इसे डिग्री कॉलेज का दर्जा मिला तथा आईकाम की यहां प्रारंभ हुआ। 1951–52 में यहां छात्रों की संख्या 346 थी। जो 1952–53 में बढ़कर 406 हो गई, 1953–54 में 450 छात्र यहां पढ़ते थे। जबकि 1960–61 में छात्रों की संख्या बढ़कर 1721 हो गई तथा व्याख्याताओं की संख्या 35 हो गई। यहां एनसीसी की सीनियर डिवीजन यूनिट की स्थापना हुई। यहां सह शिक्षा की व्यवस्था थी।

उत्तर बिहार को स्वास्थ्य के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाने वाले दरभंगा मेडिकल कॉलेज की स्थापना मील का पत्थर साबित हुई। 1878 ई0 में टेम्पल मेडिकल की स्कूल की स्थापना पटना में हुई थी। 1925 ई0 में प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज पटना में स्थापित किया गया दरभंगा महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह ने 5 लाख रूपया का डोनेशन इस मेडिकल कॉलेज को दिया और इच्छा जाहिर की कि टेम्पल मेडिकल कॉलेज को दिया और इच्छा जाहिर की कि टेम्पल मेडिकल स्कूल को दरभंगा में शिफ्ट कर दिया जाए। इस तरह टेम्पल मेडिकल स्कूल दरभंगा में 1955 में स्थापित हुआ, जो 1946 में अपग्रेड होकर दरभंगा मेडिकल कॉलेज हो गया। यह बिहार विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था तथा एमबीबीएस की डिग्री प्रदान करने लगा। यहा पोस्ट ग्रेज्युएट की पढ़ाई की सुविधा प्रदान की गई विशेष कर मेडीसिन और सर्जरी में 1 जिसे इंडियन मेडिकल काउंसिल ने मान्यता दे दी। 1962 में यहां 506 छात्र और 127 छात्राएं नामांकित थी। प्रत्येक वर्ष 150 छात्र ही मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेते थे, और चिकित्सा की पढ़ाई करते थे।

सारण जिले के सबसे प्रतिष्ठित कॉलेज राजेन्द्र कॉलेज छपरा की स्थापना 1938 ई0 हुई थी। जिसे 1939 में डिग्री स्तर की पढ़ाई के लिए पटना विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मिला था। वर्तमान छपरा जिला मुख्यालय का दूसरा प्रसिद्ध कॉलेज जगदम कॉलेज था। जहां 1954–55 सत्र में इंटरमीडिएट आर्टस और सइंस की पढ़ाई शुरू हुई। वहां बीए आर्टस की पढ़ाई 1956 में प्रारंभ हुई। 1954–55 में यहां 43 छात्र नामांकित थे। जबकि 1956–57 में 305 छात्र नामांकित हुए। 1956 से यहां एनसीसी की शुरूआत हुई।

1956 में ही गोपालगंज सब डिवीजन मुख्यालय में और हलुआ सबडिवीजन में कॉलेजों की स्थापना हुई। गोपालगंज कॉलेज 1956–57 से इंटरमीडियट आर्टस और साइंस की पढ़ाई शुरू हुई 1958–59 में वहां बेचलर ऑफ आर्टस की पढ़ाई प्रारंभ हो गई। यह कॉलेज प्रारंभ में बी0 एन0 हाई स्कुल के बिल्डिंग में ही स्थापित किया गया था।

हथुआ में गोपाश्वर कॉलेज की स्थापना 1956 में हुई जहां इंटरमीडियट आर्टस और साईस की पढ़ाई प्रारंभ हुई। हथुआ राज के बिल्डिंग में इसकी स्थापना हुई थी। 1956–57 में यहां 73 छात्र नामांकित थे जबकि इनकी संख्या बढ़कर 124 सत्र 1957–58 में हो गई।

सीवान के डीएवी कॉलेज की स्थापना जुलाई 1941 में हुई थी। जिसे इंटरमीडिएट आर्टस और कामर्स में पटना विश्वविद्यालय से संवध्न प्राप्त हुआ था। 1950–51 सत्र में यहां सिर्फ 27 छात्र नामांकित थे जबकि 1955–54 में बढ़कर छात्रों की संख्या 670 हो गई। इस कॉलेज द्वारा 1952–53 सत्र में एक एग्रीकल्चर फार्म भी खोला गया जहां छात्रों को ट्रेनिंग दी जाती थी।

निष्कर्ष :

लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए छपरा में जयप्रकाश महिला महाविद्यालय की स्थापना 1955–57 सत्र में हुई थी यह तिरहुत डिजीवन का महिला शिक्षा का दूसरा सबसे बड़ा कॉलेज था। 1956–57 में यहां बैचलर आफ आर्टस की पढ़ाई शुरू हुई। 1955–56 में यहां सिर्फ 25 छात्राएं नामांकित थी जो 1956–57 में बढ़कर 50 हो गई। इधर म्यूनिसपैलिटी ने लीज पर और मामूली किराए पर दो भवन दिया था। बिहार सरकार द्वारा इसे 15 हजार रूपए की दिए गए वही जी. डी.बिड़ला ने 5000 रूपए का डोनेशन उसी वर्ष दिया था।

संदर्भ–सूची

1. वाल्मीकि महतो–बिहार में स्कूली शिक्षा, पृष्ठ 84
2. जौहरी पाठक–भारतीय शिक्षा का इतिहास, 2013 आगरा, पृष्ठ 117
3. वही, पृष्ठ 117
4. वही, पृष्ठ 127
5. पदम रामचन्द्रण एवं वसंत राजकुमार–एजुकेशन इन इंडिया, 2001, पृष्ठ 72
6. जौहरी एवं पाठक, पृ0189
7. सुरेश चन्द्र घोष–हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन मार्डन इंडिया 1757–1986, ओरिएन्ट सांग मैन 1945, पृष्ठ 8
8. रामचन्द्रन एवं रामकुमार–पूर्वोक्त, पृष्ठ 73
9. रिपोर्ट ऑफ द इंडिया एजुकेशन कमीशन, पृ0 134
10. जौहरी एवं पाठक, पूर्वोक्त, पृष्ठ 130
11. राम शकल पाण्डेय– भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, पृष्ठ 194
12. वही, पृ0 194
13. रिजोल्यूशन, एप्वाएन्टिंग द कमीशन 1882
14. फरवरी– 2019– उत्तर बिहार में ब्रिटिश काल में सेकेन्डरी एजेकेशन का विकास
15. अप्रैल–2019–उत्तर बिहार में स्त्री शिक्षा की प्रगति
16. मई– 2019– 1854 से पूर्व बिहार की शैक्षणिक पृष्ठभूमिः एक अध्ययन